देशभूषणजी महाराज अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४५)

मुख्य टाइटल

आशीर्वचन

प्रणामांजलि

Encyclopedia of the divine practice

संयोजना

प्रस्तावना

अनुक्रमणिका

आस्था

आस्था का अर्घ्य ---------- १-३६

कालजयी व्यक्तित्व ---------- १-१५६

एक कालजयी अपराजेय व्यक्तित्व ---------- १

एक महान सन्त- रत्न ---------- ५७

जैन धर्म के मुख्य नेता ---------- ५७

आदराञ्जलि ---------- ५८

निश्छल व्यक्तित्व ---------- ५८

विरल विभूतियों में एक ---------- ५९

अभिनन्दन ---------- ६०

स्नेह-सौजन्य के साक्षात प्रतीक ---------- ६१

आचार्यश्री के प्रथम दर्शन ---------- ६२

सन्त- रत्न ---------- ६३

महाराज श्री की जीवन झांकी ---------- ६४

श्री महावीर वाणी के उदघोषक ---------- ६७

यतिवर्य नमोऽस्तु ---------- ६८

मेरे शिक्षा गुरु ---------- ६८

विश्वविभूति ---------- ६९

उच्च कोटिके आचार्य ---------- ६९

जैन शासन के उज्जवल नक्षत्र ---------- ७०

अदभूत है उनकी व्याख्यान शैली ---------- ७१

प्रात स्मरणीय ---------- ७१

परोपकारी गुरुदेव ---------- ७२

विनम्रता की प्रतिमूर्ति ---------- ७४

महान उपकारी ---------- ७४

अलौकिक जीवन ---------- ७५

पावन धर्मतीर्थ ---------- ७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारत गौरव--- ७६
संत शील के भूषण--- ७६
संकल्प और त्याग की प्रतिमूर्ति ---७७
भारत की शोभा -- ७९
सिद्ध पुरुष -- ७९
भारत गौरव--- ८०
जनकल्याणकारी सन्त--- ८०
बन्दियों की भावना--८१
Homage to Acharyaratna Shri deshbhushana ji ------------------------------------- ८३
साधुरत्न आचार्य देशभूषण महारज---८७
आध्यात्मिक एवं सामाजिक उपलब्धियों के समग्रद्रष्टा ------------------------------------ ९०
अनुभूती की जाती है,कही नहीं जाती---९१
जिन शासन प्रभावक -- ९२
श्रमण- परम्परा में एक ज्योतिर्मय व्यक्तित्व---९५
महान प्रभावक दिगम्बर सन्त --- ९८
राष्ट्रीय एकता के आध्यात्मिक गुरु -- ९९
पावन स्मृतियाँ-- १००
मेरे शिक्षा गुरु---१०१
समन्वय सेतु-- १०२
आचार्यरत्न अलीगढ नगर में --- १०४
आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज --१०५
स्मृर्तियां जो धुंधलायी नहीं --- १०६
युगाचार्य महान सन्त--१०७
भूली-बिसरी यादे --- १०८
धर्मचक्र प्रवर्तक ---११०
आचार्य महाद्रु मं वन्दे---१११
वन्दनीय पंचक--११२
साधना के मूर्तरुप --११२
कुछ अमिट यादे ---११३
लोककल्याणकारी साधक---११३
मेरा तो उद्धार हो गया--- ११४
धर्म के महान आचार्य --- ११४
सचल तीर्थ-- ११५
शत- शत वन्दन--- ११५
प्रणामांजलि ---११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश और समाज के भूषण --११६
महान व्यक्तित्व ---११६
दिव्य पुरुष--- ११७
प्रेरणा के अमिट स्त्रोत -- ११७
कालजयी चिन्तन के कुछ स्वर --११८
परमकारुणिक आचार्यश्री -- १२०
चारित्र शिरोमणि -- १२०
श्री पाश्वनाथ दिमगम्बर जैन मन्दिर जी के उद्धारक--------------------------------------१२१
राजस्थान में आचार्य देशभूषण जी -- १२२
सन्त शिरोमणि परम गुरुदेव--- १२३
कलकत्ता में ससंघ पदार्पण---१२४
सिद्धियों के धनी--१२४
श्रावक सदकर्म करता रहे --१२५
निर्भिक और मार्मिक वक्ता ---१२५
धर्मध्वजा के उन्नायक --- १२६
साधवो न हि सर्वत्र--- १२६
एक अपूर्व अतिशयी घटना--१२७
A Devotees Homage --- 127
अतिशय क्षेत्र (बरेली) का विकास --१२८
उपसर्ग विजेता --१२८
सार्वजनिक हित के प्रेरक --- १२९
साडी पर हवन -- १२९
सजीव तीर्थ --- १२९
विश्वविभूति--- १३०
आरा (बिहार) में महाराज का लेखन कार्य--- १३०
अदभूत स्मृति के धनी -- १३०
साधना की पराकाष्टा---१३१
पवित्र जीवन ---१३१
निष्काम साधक --- १३२
श्रमण संस्कृति के उन्नायक --- १३२
सफल मार्गदर्शन -- १३३
तपस्वी साधुराज -- १३३
पावन व्यक्तित्व-- १३३
धर्ममूर्ति आचार्यश्री --- १३४
आत्मानुसंधान और परकल्याण का संकल्प---१३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण शिरोंमणि-- १३६
On mv having the first darsana of Acharyaratan shri deshbhushan ji Maharaj----- 137
संकल्पों के प्रति निष्ठा -- १३८
भक्तवत्सल एवं विनोदप्रिय -- १३९
धर्म दीपक -- १४०
चन्दनं न वने वने -- १४०
अनेकान्त साप्वभौम -- १४०
गुरु गुण लिखा न जाय -- १४१
गतिशील धर्मचक्र-- १४२
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता -- १४२
कृपा सिंधु, नर रुप हरि -- १४३
राष्ट्रसंत आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज -- १४४
सदगुरु महिमा अपार --- १४५
शत- शत वन्दन --- १४६-१४७
आयरियप्पव रो सिरिदेसभूषणौ--- १४८
समस्या और समाधान-- १५१
रसवन्तिका -- १-४०
अध्यात्म- पुरुष -- १
ईन्द्रीयजी श्री देशभूषण जी --- २
क्षितिज से उभरा सूरज -- ३
हे सरस्वति- पुत्र -- ३
स्तुति- पंचक --- ४
हे भारत के संत तेजस्वी --- ४
धन्य देश वह -- ५
परमहंस आचार्यरत्न को शत- शत बार प्रणाम-- ६
हे तपोरत्न, भारत- भूषण--- ७
अभिनन्दन-- ८
अभिनन्दन-- ९
कोटि- कोटि प्रणाम -- ९
स्तवन -- १०
कर रहा विश्व वन्दन है--- ११
हे भविष्य के द्रष्टा -- १२
वन्दन करता हूं बार- बार -- १३
अभिनन्दन--- १५
हे आलोक- पुरुष -- १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनन्दन होते रहें ---------- १७
शत- शत अभिनन्दन ---------- १७
आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी ---------- १८
हे आचार्य आपकी जय हो ---------- १८
अप्रित चरण श्रद्धा- सुमन ---------- १९
प्रखर सूर्य ---------- १९
ईस मुनिवन को नमन करो ---------- २०
गुरु- गौरव आध्यात्मिक भूषण ---------- २०
संस्कृति के महासूर्य ---------- २१
मेरा नमन करो स्वीकार ---------- २१
आस्था के प्रतीक ---------- २२
जयकार तो बोलो ---------- २२
उन पवित्र पदाम्बुरुह में विनय सहित प्रणाम है ---------- २३
शत- शत वन्दन ---------- २४
सचल तीर्थ ---------- २५
हे युग-कल्याणी ---------- २५
सार्थवाह ---------- २५
आचार्य देशभूषण जी ---------- २६
शत- शत प्रणाम ---------- २६
विराजो लीलाधारी ---------- २६
तं देशभूषण महर्षिमहं समीडे ---------- २७
संस्तुति ---------- २७
देशभूषणाष्टकम ---------- २८
महाश्रेष्ठवन्दनम् ---------- २८
आचार्य- स्तव- द्वादशी ---------- २९
देशभूषण गुणस्तुति ---------- ३०
आचार्य देशभूषण- स्तुति ---------- ३१
आचार्य मुनि देशभूषणमहं वन्दे जगदवन्दितम ---------- ३३
आचार्य देशभूषण स्तुति ---------- ३९
आईरयदेशभूषण- थुदी ---------- ३९
सिरिदेवो देशभूषणो जयई ---------- ४०
अभिनन्दन ---------- ४०
जगदाणदो देशभूषणो ---------- ४०
महाराज श्री की जीवन- गाथा ---------- ४१
ए देव, तुम्हारे कदमों में सर अपना झुकाने आया हूं ---------- ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुल ए अकीदत ---४७
अमृत-कण --१-११६
जैन धर्म का शाश्वत स्वरुप – आचार्य देशभूषणजी महाराज --------------------------------१
जैन धर्म एवं भक्ति – आचार्य देशभूषणजी महाराज -------------------------------------- १५
जैन आचार- संहिता – आचार्य देशभूषणजी महाराज -------------------------------------- ३६
भाव एवं मनोविकार – आचार्य देशभूषणजी महाराज -------------------------------------- ५९
व्यक्ति एवं समाज – आचार्य देशभूषणजी महाराज --७४
चिन्तन के विविध आयाम – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---------------------------------८१
राष्ट्र, को सम्बोधन – आचार्य देशभूषणजी महाराज--११२
सृजन- संकल्प --- १-८०
साहित्य- पुरुष आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी – डॉ. रमेशचन्द्र गुप्त – सुमतप्रसाद जैन--------१
भगवान महावीर और उनका तत्व दर्शन – प्रो. सुरेशचन्द्र गुप्त --------------------------- १७
शास्त्रसार समुच्चय – डॉ. मोहनचन्द ---२१
भरतेश- वैभव – श्री सुमतप्रसाद जैन --२५
धर्मामृत – डॉ. रवेलचन्द आनन्द ---३१
रत्नाकर- शतक – डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र-- ३४
योगामृत – डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया--- ३९
अपराजितेश्वर शतक – डॉ. देवराज पथिक -- ४१
ग्रंथ- शिरोमणि श्री भूवलय – डॉ. बालकृष्ण अकिंचन ---------------------------------------४३
सिरि भूवलय – श्री अनुपम जैन ---४७
णमोकार ग्रन्थ – मुंशी सुमेरचन्द जैन ---४८
णमोकार ग्रन्थ – श्रीमती निरा जैन --५०
मेरुमंदर पुराण – डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ---५२
उपदेश –सार- संग्रह – डॉ. भरतसिंह --५४
उपदेश- सार संग्रह – श्री जगत भंडारी --५७
श्री निर्वांण लक्ष्मीपति स्तुति – डॉ. राज बुद्धिराजा -- ५९
गुरु- शिष्य प्रश्नोत्तरी – डॉ. सुरेश गौतम --६१
ढाई हजार वर्षो में श्री भगवान महावीर स्वामी की विश्व को देन – डॉ. नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी--- ६३
दशलक्षण धर्म – डॉ. सतीषकुमार भार्गव --- ६४
नर से नारायण – श्री गुरुप्रसाद कपूर --- ६६
चोदह गुणस्थान चर्चा कोष – श्री सुनील कुमार--- ६७
एमोकार- मन्त्र- कल्प – श्री युगेश जैन-- ६९
णमोकार- मन्त्र-कल्प – पं. संदीपकुमार जैन --७४
भावनासार – डॉ. लालचन्द जैन ---७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावनासार – डॉ. प्रमोदकुमार जैन -- ७८
धर्मामृतसार – कु. रुचिरा गुप्ता-- ७९
मानव जीवन – वैद्य प्रेमचन्द जैन -- ८०
भगवान महावीर और मानवता का विकास – वैद्य प्रेमचन्द जैन -------------------------- ८०
शास्त्र- गुच्छक – वैद्य प्रेमचन्द जैन -- ८०
स्वानुभूति से रसानुभूति की ओर – डॉ. मोहनचन्द ------------------------------------- ८१

चिन्तन

जैन दर्शन मीमांसा - -- १-१७६
सम्पादकीय -- १
स्याद्वाद साहित्य का विकास – श्री आनन्द ऋषिजी महाराज ----------------------------- ९
द्वैतवाद और अनेकान्त – युवाचार्य महाप्रज्ञजी --- १७
स्याद्वाद सिद्धान्त मनन और मीमांसा – श्री रमेश मुनि शास्त्री------------------------------ २१
अन्य दर्शनों में अनेकान्तवाद के तत्व – श्री सुव्रत मुनि ---------------------------------- २६
स्याद्वाद – डॉ. सत्यदेव मिश्र -- २९
समन्वय का मार्ग स्याद्वाद – डॉ. अरुणलता जैन -- ३३
सत्य की सर्वाड्ग साधना – श्री देवेन्द्र मुनि --- ३७
तत्वज्ञता – श्री जिनेन्द्र वर्णी --- ४८
जैन- दर्शन में द्रव्य की अवधारणा – श्री कपूरचन्द जैन ----------------------------------- ५२
The jaina idea of universe – Prof. M. S. Ranadive -- 65
Jain concept of living – Dr. J. D. Bhomaj --- 69
जैन दर्शन सम्मत – डॉ. प्रेमचन्द जैन--- ७७
जैन दर्शन में जीव आत्मा – डॉ. श्रेयांसकुमार जैन -- ८१
पुदगल और आत्मा का सम्बन्ध – आचार्य अनन्तप्रसाद जैन ------------------------------- ८५
जैन कर्म सिद्धान्त तुलनात्मक विवेचन – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी------------------------------ ८७
जैन दर्शन में बन्ध मोक्ष – प्रो. अशोककुमार-- ८९
आचार्य कुन्दकुन्द की संतुलित दृष्टि – डॉ. लालबहादुर शास्त्री------------------------------ ९३
प्रवचनसार में संसार और मोक्ष का स्वरुप – डॉ. रमेशचन्द्र जैन --------------------------- ९६
श्रवणवेलगोला के अभिलेखों में जैन तत्व चिन्तन – श्री जगबीर कौशिक ------------------ १०१
प्रमाणमीमांसा एक अध्ययन – श्री श्रीचन्द चोरड़िया -------------------------------------- १०५
योगिप्रत्यक्ष एक विवेचन – डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर ---------------------------------- ११३
शब्दाद्वैतवाद जैन दृष्टि – डॉ. लालचन्द जैन -- ११५
आदिपुराण में जैन दर्शन के तत्व – डॉ. उदयचन्द जैन---------------------------------- १३२
समन्वय का अमोध दर्शन अनेकान्त – उपाध्याय अमर मुनि ---------------------------- १३७
आगम- साहित्य में योग के बीज – मुनि श्री राकेश कुमार ------------------------------ १४०
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका दार्शनिक अवदान – डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री ------------- १४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारतीय दर्शन के सन्दर्भ में जैन महाकाव्यों द्वारा विवेचित....- डॉ. मोहनचन्द----------- १५१
Kundakunda on samkhya- purusa – Dr. Shiv Kumar-------------------------------------- 161
Some less known verses of siddhasena divakara – Prof. M. A. Dhaky -------------- 165
The style of writing for debate in Indian philosophy – Shri Bishan Swaroop
Rustagi -- 169
The Ultimate goal of Jain Philosophy – Prof. J. L. Shastri ------------------------------- 175
जैन तत्व और चिन्तन आधुनिक सन्दर्भ-- १-१६८
सम्पादकीय --- १
जैन दर्शन की सैद्धान्तिक मान्याताओं के सन्दर्भ में पुमर्जन्म के वैज्ञानिक अध्ययन
की समीक्षा – मुनि श्री महेन्द्र कुमार -- १४
अपराध वृति एवं जैन दृष्टिकोण से सन्बन्ध एक आधुनिक शोधकार्य की रुपरेखा –
डॉ. रमेशभाई लालन -- २४
वर्तमान युग में अहिंसा का महत्व – श्री कामेश्वर शर्मा ---------------------------------- २७
अनेकान्तवाद और सर्वोदयवाद – डॉ. भागचन्द्र जैन ------------------------------------- २९
जैन शास्त्रीय परम्परा एवं आधुनिक वैज्ञानिक...- श्री नन्दलाल जैन----------------------- ३२
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन के पुनर्मूल्याड्कन की दिशाएं – डॉ. दयानन्द भार्गव------- ३६
सामाजिक समस्याओं में समाधान में जैन धर्म का योगदान – डॉ. सागरमल जैन -------- ४०
जैन दर्शन आधुनिक सन्दर्भ – डॉ. हरेन्द्र प्रसाद वर्मा ----------------------------------- ४९
विश्वधर्म के रुप में जैन धर्म-दर्शन की प्रासङ्गिक्ता – डॉ. महावीर सरन जैन ------------- ५८
श्रमण संस्कृति की विश्व मानवता को देन – श्री श्रीकृष्ण पाठक -------------------------- ६४
जैन धर्म की विश्व को मौलिक देन – डॉ. कस्तूरचन्द सूमन ---------------------------- ६६
आधुनिक युग मैं जैन सिद्धान्तों की उपयोगिता – डॉ. विमल कुमार जैन ----------------- ७०
वैज्ञानिक आईने में जैन धर्म – श्री राजीव प्रचंडिया ------------------------------------- ७४
परम ज्ञानियों में एक वैज्ञानिक महावीर – स्वामी वाहिद काजमी ------------------------- ८०
आधुनिक धार्मिक एकता के परिप्रेक्ष्य में तुलसी... – श्री जगत भंडारी -------------------- ८७
गुजरात के ईतिहास- निरुपण में आधुनिक जैन साधुओं का योगदान – श्री रसेस
जमीदार -- ९२
The survival of Jainism – Prof. Bansidhar Bhatt -- 97
Studies in south Indian Jainism – Dr. B. K. Khadabadi ----------------------------------- 103
Evolution agriculture and the jain philosophy – Dr. H. K. Jain -------------------------- 108
How karma theory relates to modern science – Dr. Dulichandra Jain ----------------- 112
aparigraha, its relevance in modern times – Prof. Angraj Chaudhary ---------------- 123
importance of morakity in Jainism – Sh. J. B. Khanna ------------------------------------ 128
आधुनिक भाषाविज्ञान के सन्दर्भ में जैन प्राकृत – मुनि श्री नगराज जी.डी.-------------- १२९
Values education and Jainism – Sh. Som Pal Sharma ---------------------------------- 163
जैन प्राच्य विद्याएँ --- १-२२०
सम्पादकीय ---१
जैन जगत्- उत्पति और आधुनिक विज्ञान – प्रो. जी. आर. जैन----------------------------९
Some sarange notions in jaina cosmology – Dr. Sajjan Singh Lishk------------------- 15

प्रारम्भिक जैन ग्रन्थों में बीजगणित – डॉ. मुकुट बिहारीलाल अग्रवाल ---------------------- १९
Contribution of Ancient Jaina Mathematicians – Dr. B. S. Jain --------------------------- 33
The Jaina Ulterior Motive of Mathematical Philosophy – Prof. L. C. Jain & Shri C. K. Jain --- 49
जिनभद्रगणि के एक गणितीय सूत्र का रहस्य – डॉ. राधाचरण गुप्त ---------------------- ६०
Contribution of mahaviracharya in the… - Dr. R. S. Lal ------------------------------------ 63
महावीराचार्य कृत गणितसार संग्रह – डॉ. एलेक्जांडर वोलोदार्स्की -------------------------- ७७
Survey of the work done on jain mathematies – Shri. Anupam Jain ------------------ 105
संस्कृत व्याकरण को जैन आचार्यों का योगदान – डॉ. सूर्यकान्त बाली ------------------- ११३
पूज्यवाद देवनन्दी का संस्कृत- व्याकरण को योगदान – डॉ. प्रभा कुमारी ----------------- १३१
आयुर्वेद के विषय में जैन दृष्टिकोण और जैनाचार्यो का योगदान – आचार्य राजकुमार जैन -- १६९
दक्षिण में जैन- आयुर्वेद (प्राणावाय) की परम्परा – डॉ. राजेन्द्र प्रकाश भटनागर --------- १८३
आयुर्वेद को जैन सन्तों की देन – डॉ. तेजसिंह गौड़ ------------------------------------- १९७
आयुर्वेद और जैन धर्म एक विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. प्रमोद मालवीय, डॉ. शोभा मोवार, डॉ. यज्ञदत्त शुक्ल, प्रो. पूर्णचन्द्र जैन -- २०१
संगीत समयसार के सन्दर्भ में गायक- गण दोष- विवेचन – श्री वाचस्पति मौद्गल्य ------ २०५
जैन साहित्यानुशीलन --- १-१८८
सम्पादकीय -- १
संस्कृत में प्राचीन जैन साहित्य – डॉ. शिवचरणलाल जैन ---------------------------------- ९
जैन संस्कृत महाकाव्यों में रस – डॉ. पुष्पा गुप्ता --- १२
The jaina contribution to Indian poetics – Dr. K. Krishnamoorthy ------------------------ 40
Exposition of sabda- shaktis by siddhicandragani – Dr. Satyapal Narang ------------ 44
The Ramayana of Valmiki and the Jaina Puranas – Dr. Upendra Thakur ------------- 48
जैन साहित्य में राम भावना – डॉ. शशिरानी अग्रवाल ------------------------------------ ५५
जैन राम- कथा की विशिष्ट परम्परा – डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा ------------------------------ ६१
राम- कथा का विकास प्रमुख जैन काव्यों तथा आनन्द रामायण.. – डॉ. अरुण गुप्ता ------ ६४
जैन रामायण पउमचरिउ का व्यावहारिक महत्व – श्रीमती विणा कुमारी ------------------ ७४
स्वंयभू- रचित पउमचरिउ में वर्णित राम का व्यक्तित्व – -------------------------------- ७७
जैन धर्म तथा दर्शन के सन्दर्भ में उत्तरपुराण की रामकथा – ------------------------------ ८१
जैन राम-कथाओं में धर्म – डॉ सुरेन्द्रकुमार शर्मा --- ९०
प्राकृत- जैन कथा साहित्य का महत्व – सुधा खाव्या ------------------------------------ ९७
जैन अपभ्रंश कथा- साहित्य का मूल्यांकन – श्री मानमल कुदाल ------------------------ १०७
जैन भक्तकवि बनारसीदास के काव्य- सिद्धान्त – डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त ---------------------- ११२
जैन- हिन्दी- पूजा- काव्य में अष्टद्रव्य और उनका प्रतीकार्य – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया ----- ११९
हिन्दी के विकास में जैन विद्वानों का योगदान – डॉ. प्रेमचन्द रांवका -------------------- १२४
जैन दर्शन में वीर भाव की अवधारणा – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------------------------- १२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन रास काव्य एक अध्ययन – डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ ------------------------------------ १३०
जैन हिन्दी- काव्य में व्यह्वत संख्यापरक काव्य-रुप – डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया----------१४४
१६ वी शताब्दी का अचर्चित हिन्दी कवि बह्म गुणकीर्ती – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ----१४७
भगवान नेमिनाथ एवं राजमति से सम्बन्धित हिन्दी रचनाएं – श्री वेदप्रकाश गर्ग--------१५०
कवि-कंकण छीहल पुनर्मूल्यांकन – डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद ---------------------------१५७
प्रबुद्ध रौहिणेय- समीक्षात्मक अनुशीलन - डॉ. रामजी उपाध्याय -------------------------- १७१
आधुनिक हिन्दी जैन महाकाव्य सीमा और सम्भावना - डॉ. इन्दु राय------------------- १७६
तमिलनाडु में जैन धर्म एवं तमिल भाषा के विकास में...- पं. सिंहचन्द जैन शास्त्री ------ १८०
उर्दु भाषा में जैन साहित्य – डॉ. निजाम उद्दीन-- १८६
सम्राट अकबर की जैन धर्म में रुचि – श्री संजय कुमार जैन---------------------------- १८८
जैन धर्म एवं आचार -- १-१५२
सम्पादकीय --- १
जैन साधना में ध्यान-स्वरूप और दर्शन – देवेन्द्र मुनि शास्त्री ------------------------------ ९
जम्बूद्वीप-एक अध्ययन – आर्यिका ज्ञानमती माताजी ------------------------------------ १६
परमसिद्धि का चरम सोपान-दिगम्बरत्व – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन -------------------------- २३
जैन श्रमण-परम्परा का धर्म-दर्शन – पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ------------------------ ३०
श्रमण कौन – डॉ. पन्नालाल जैन शास्त्री --- ३३
जीवदया का विश्लेषण – पं. बंशीधर व्याकरणाचार्य ------------------------------------- ३७
सम्यक् चारित्र – पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री -- ४६
जैन शासन – पं. नरेन्द्रकुमार न्यायतीर्थ -- ५६
जैन साधना-पद्धति अर्थात् श्रावक की ११ प्रतिमाएँ – व्र. विद्युल्लता शाह------------------- ६०
Five Controlling Factors-A Unity Admist VArities – Prof. Mahesh Tiwari -------------- 66
Jainism-Symbol of Emergence of New Era – Dr. Sangha Sena ------------------------- 71
Jaina Ethical Theory – Dr. Kamal Chand Sogani--- 73
The Jaina Value of Life – Dr. Ramjee Singh-- 77
Abandonment of Passions in Jainism – Dr. B. K. Sahay ---------------------------------- 81
Jain Concept of Ahimsa – Dr. P. M. Upadhye-- 83
अहिंसा का स्वरूप और महत्त्व – डॉ. चन्द्रनारायण मिश्र --------------------------------- ८५
जैनधर्म-करुणा की एक अजस्र धारा – श्री सुमत प्रसाद जैन ----------------------------- ९२
सुगत-शासन में अहिंसा – प्रो. उमा शंकर व्यास --- ९९
जैन दर्शन में अहिंसा – श्री सुनील कुमार जैन-- १०३
श्रमण-संस्कृति का युगपुरुष हिरण्यगर्भ – डॉ. हरिन्द्र भूषण जैन ------------------------ १०५
भगवान् महावीर का जीवन दर्शन – श्री नीरज जैन ------------------------------------- १०८
व्यावहारिक जैन प्रतिमानों की आधुनिक प्रासंगिकता – डॉ. एल. के. ओड ---------------- ११०
जैन धर्म के नैतिक अमोघ अस्त्र – डॉ. उमा शुक्ल -------------------------------------- ११६
अनेकान्तात्मक प्रवचन की आवश्यकता – डॉ. रतनचन्द्र जैन ---------------------------- ११९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन योग-परम्परा में क्लेश-मीमांसा – कु. अरुणा आनन्द --------------------------------१२१
कल्याणकों में ज्ञान कल्याणक – डॉ. कन्छेदी लाल जैन -------------------------------- १२४
उत्तम ब्रह्मचर्य-मोक्षमार्ग का अन्तिम चरण – श्री प्रतापचन्द्र जैन ------------------------- १२७
जैन धर्मशास्त्रों और आधुनिक विज्ञान के आलोक में पृथ्वी – डॉ. दामोदर शास्त्री --------- १२९
जैन इतिहास, कला और संस्कृति -- १-१८०
सम्पादकीय --१
संस्कृति का स्वरुप भारतीय संस्कृति और जैन संस्कृति – प्रो. विजयेन्द्र स्नातक -----------९
The jaina inseriptions from Mathura – Dr. Umakant P. Shah ------------------------------ 17
Dikpalini matrikas – Prof. Arya Ramchandra G Tiwari --------------------------------------- 19
भारतीय धार्मिक समन्वय में जैनधर्म का योगदान – प्रो. कृष्मदत्त वाजपेयी --------------- ३६
अमृतचन्द्र और काष्ठा संघ – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री --- ३९
जैन सरस्वती प्रतीमाओं का उदभव एवं विकास – डॉ. ब्रजेन्द्र नाथ शर्मा ------------------ ४२
चतुर्विध संघ- प्रस्तरांकन – श्री शैलेन्द्रकुमार रस्तोगी ------------------------------------ ४६
मूलाराधना एतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन – प्रो. राजाराम जैन -------- ५७
मौर्य चन्द्रगुप्त विशाखाचार्य – श्री चन्द्रकान्त बाली --------------------------------------- ७३
जैन साहित्य में आर्थिक ग्राम- संगठन से सम्बन्ध मध्यकालिन.. – डॉ. मोहनचन्द ------- ८०
तीर्थंकर तथा वैष्णव प्रतिमाओं के समान लक्षण – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ---------- ९४
मालवा से प्राप्त अच्युता देवी की दुर्लभ प्रतिंमाएँ – डॉ. सुरेन्द्रकुमार आर्य ---------------- ९५
एशियाई श्रमण परम्परा एक विहङ्गम दृष्टि – प्रो. चन्द्रशेखर प्रसाद --------------------- ९७
जैन धर्म, जैन दर्शन तथा श्रमण संस्कृति – डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे --------------------- १०५
भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति का योगदान – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन ---------------- १०८
जैनधर्म और उसका भारतीय सभ्यता और संस्कृति को योगदान – डॉ. चमनलाल जैन -- ११७
जैन परम्परा का सांस्कृतिक मूल्यांकन – डॉ. मोरेश्वर पराड़कर -------------------------- १२३
भगवान महावीर श्रमण संस्कृति के महान उत्थापक – डॉ. नन्दकिशोर उपाध्याय -------- १२७
आन्ध्रप्रदेश में लोक संस्कृति की जैन परम्परा – डॉ. कर्ण राजशेषगिरिराव --------------- १३०
Jaina influence on taniks – Prof. S. Thanyakumar -- 133
प्राचीन जैन स्थल भद्दिलपुर ऐतिहासिकता – डॉ. के. सी. जैन --------------------------- १३८
दिगम्बर तीर्थ गेरसप्पा के जैन मन्दिर और उनकी वर्तमान दुर्दशा – श्री अगरचन्द नाहटा -- १४०
जैनधर्म और स्थापत्य का संगम तीर्थ ओसिया – डॉ. सोहनकृष्ण पुरोहित --------------- १४२
प्रसिद्ध कला तीर्थ राणकपुर – डॉ. चेतन प्रकाश पाटनी ---------------------------------- १४६
जैन सांस्कृतिक गरिमा का प्रतीक बुन्देलखण्ड – श्री विमल कुमार जैन सोंरया ----------- १४९
मालवा की परमारकालीन जैन प्रतिमाएँ – डॉ. मायारानी आर्य --------------------------- १५१
जैनधर्म में देवियों का स्वरुप – डॉ. पुष्पेन्द्रकुमार शर्मा --------------------------------- १५३
जैन आगमों में नारी – डॉ. विजयकुमार शर्मा -- १५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिल्ली का ऐतिहासिक जैन सार्थवाह नट्टल साहू – आचार्य श्री कुन्दनलाल जैन --------- १६८
जैन मन्दिरों के शासकीय अधिकार – श्री लालचन्द जैन -------------------------------- १७३
जयपुरी कलम का एक सचित्र लेख – श्री भँवरलाल नाहटा ------------------------------ १७४
मोहन- जो दडो जैन परम्परा और प्रमाण – मुनि श्री विद्यानन्दजी----------------------- १७६
गोम्मटेश दिग्दर्शन --- १-५२
सम्पादकीय --१
Spiritual magnificence of bhagawan gommateshwara and foreign writers – T. K. Tukol --5
Colossal image of bahubali the sublime seulpture – Dr. Vilas A Sangve --------------- 11
Gommateswara mahamastakabhishek – Sh. Satishkumar Jain -------------------------- 14
श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में दान परम्परा – श्री जगबीर कौशिक---------------------------- 20
युगों- युगों में बाहुबली – डॉ. विद्यावती जैन -- २६
श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में वर्णित बैंकिंग प्रणाली – श्री बिशनस्वरूप रुस्तगी---------- ४२
जन-जन की श्रद्धा के प्रतीक भगवान गोम्मटेश – सुमतप्रसाद जैन ------------------------४५
परिशिष्ट
लेखकानुक्रमणिका
दातारों की नामावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org